International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.1 Sept-Oct 2024

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में चित्रित सामाजिक दशा

डॉ.इन्नुस एस.शेख.
सहा.प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यलय,सातारा
Corresponding Author- डॉ.इन्नुस एस.शेख.
Email: dr.innus@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.13981991

शोध सार:
हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है. उसी परंपरा को आगे बढाने का काम हिंदी के जानेमाने साहित्यकार अब्दुल बिमिल्लाह करते दिखाई देते है.बिस्मिल्लाह जी ने हमेशा अपने साहित्य में समाज के निम्न वर्ग और पीछड़े वर्ग को स्थान देने का काम किया है. उन्होंने सिर्फ उनका दुःख और समस्याओं को समाज के सामने नहीं रखा,तो उस दुःख और समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश की दिखाई देती है.बिस्मिल्लाह जी ने हमेशा से उच्च वर्गीय ,पूंजीपति लोगों के खिलाफ आवाज उठाते रहें हैं.

बीज शब्द : कुलीनता, गली-कुचे , चारदीवारी, आर्थिक संपन्नता-विपन्नता, जीवनमूल्य, खेतिहर मजदूर पूंजीपति, जमींदार, सेठ साहूकार, अन्नदान, खाल, जुलाहा,बस्ती आदि.

प्रस्तावना:

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने साहित्य लेखन का विषय हमेशा से सर्वसामान्य वर्ग से लिया है.वे इस विषय को लेकर सिर्फ चिंता व्यक्त नहीं करते तो उस पर चिंतन भी करते हैं.उन्होंने सिर्फ अपनी कहानियों में ही नहीं तो पूरे साहित्य लेखन इस वर्ग का चित्रण किया दिखाई देता है.खासकर उन्होंने अपनी कहानियों में इस वर्ग की गली-कुचे का ही चित्रन नहीं किया तो प्रत्यक्ष रूप से वहां के जन - जीवन को बहुत ही नजदीक से देखा और समाज के सामने वास्तव बातें रखने की कोशिश की है.उसी कोशिश का नतीजा उनके साहित्य के माध्यम से हमारे सामने आता है. उन्होंने अपनी कहानियों में निम्नवर्ग,निम्नमध्यवर्ग,मध्यवर्ग और उच्चवर्ग का चित्रण बहुत ही सटीक ढंग से किया है. वर्ग विभाजन में "गांवों को समाज संरचनाके मुख्य दो आधार है अर्थ और जाति आर्थिक संपन्नता विपन्नता और जातिगत कुलीनता अकुलीनता या उच्चता नीचता के मानदंड पर ही प्रामीण समाज वगो में विभाजित है. आर्थिक दृष्टि से संपन्न या उच्च जाति में उत्पन्न व्यक्ति उच्चवर्ग में उनसे कुछ कम संपन्न व्यक्ति मध्यवर्ग में और गरीब विपत्र तथा छोटी जातियों के लोग 'निम्नवर्ग' में गिने जाते हैं."[1]

वर्ग भेद की भावना आदिकाल से ही हमारे समाज में चली आई है. अर्थ के कारण समाज में विषमता होने की वजह से वर्ग भेद का होना अनिवार्य है. इसी आधार पर व्यक्ति किसी वर्ग से जुड़ जाता है. प्रत्येक वर्ग के अपने सामान्य गुण, व्यवहार, तौर तरीकें होते हैं, जो उन्हें एक दूसरे से अलग करते हैं. इसमें राजा प्रजा, शोषक शोषित, मालिक मजदूर, सेठ साहूकार, जमींदार व किसानों का व हमेशा से लक्षित होता है. मार्क्स के अनुसार प्रमुख रूप से समाज में दो वर्ग हैं, उसमें एक शोषक वर्ग और दूसरा शोषित या सर्वहारा वर्ग परंतु वर्तमान समाज में तीन वर्ग विद्यमान हैं. उच्चवर्ग अभिजात वर्ग है वह शोषक या सर्वसंपन्न है. निम्नवर्ग, सर्वहारा या मजदूर वर्ग वह हमेशा से शोषित है. साथ ही मध्यवर्ग दोनों के बीच का स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर वर्ग है और संघर्षमय जीवन व्यतीत करता है. वास्तवतः यहां आम आदमी का जीवन संघर्ष से पीड़ित है. इसलिए हर वर्ग अपनी प्रतिष्ठा एवं स्तर अबाध रखने में कार्यरत है.

वर्ग का आधार जन्म न होकर व्यक्ति का सामाजिक दर्जा एवं आर्थिक स्थिति होती है. वर्ग में जीवनमूल्य, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, शिक्षा, नैतिकता, समाज जीवनपद्धति, विचार एवं समान प्रवृत्ति आदि में समानता है. कभी-कभी व्यवसाय या अन्य सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के कारण व्यक्ति का वर्ग परिवर्तन हो सकता है क्योंकि वर्ग यह एक अस्थिर और चंचल समूह है. इसीलिए माना जाता है कि जाति का आधार जन्म है, तो वर्ग का आधार अर्थ है. वर्तमान युग में ऐसा कोई भी समाज या संसार में ऐसा कोई भी देश नहीं, जहां के समाज में वर्ग विभाजन नहीं हैं. वर्गीय विभाजन सिर्फ महानगरीय परिवेश में ही नहीं, तो ग्रामीण समाज में भी दृष्टिगोचर होता है. ग्रामीण जीवन में जाति के आधार पर अधिक तर वर्ग विभाजन होता है. गांवों के सामाजिक जीवन मे यद्यपि

सामूहिक और सहयोगी जीवन की विशेषताएं होती है, लेकिन यह भी इस वर्गभेद से अछूते नहीं है. प्राचीन युगीन गांव आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर होते हुए भी यहां जातिभेद और वर्गभेद पनपता है. अधिकतर गांवों का समाज कृषि पर निर्भर होता है और नगरीय समाज मजदूरी पर, फिर भी दोनों में अंतर है. गांव का निम्नवर्ग याने किसान और खेतिहर मजदूर पूंजीपति, जमींदार, सेठ साहूकार जैसे उच्चवर्गियों से शोषित एवं पीडित हैं, तो नगरीय परिवेश का मजदूर, मिल मालिकों और उद्योगपतियों द्वारा शोषित है. दोनों भी शोषण की चक्की में पीसते हैं, परंतु उन्हें पीसनेवाले अलग-अलग है, किंतु इनकी कौम एक ही है.

बिस्मिल्लाह की कहानियों के अध्ययन के पश्चात् उनकी कहानियों में भी उच्चवर्ग का रहन सहन और अस्तित्व का चित्रण प्राप्त होता है. उच्चवर्गीय समाज में नारी को तो परिवार में बिल्कुल स्थान नहीं है. उसे अपने पति के साथ परिवार के अन्य लोगों के बंधनों में रहना पड़ता है. वह अपने घर की चारदीवारों से बाहर नहीं आ सकती है. फिर उस पर कैसी भी आपत्ति क्यों न आए. इतना ही नहीं तो यह अपने परिवार के बड़े व्यक्तियों के सामने तक नहीं आ सकती है. चाहे वह उसके ससुर, जेठ या खुद के पेट से पैदा हुआ अपना बेटा क्यों न हो. इसी प्रकार बिस्मिल्लाह की कहानी सिद्दीको साहब में अपने पति को सांप के काटने पर चिल्लाती हुई घर को बहू बाहर बड़े भाई के पास आती है, उसी समय बड़े भैया क्या हुआ? कैसे हुआ पूछने के बजाए अपनी बहू से सीधा सवाल करते हैं, "तुमने कदम कैसे निकाले ? तुम्हें मालूम नहीं है क्या कि इस घर की औरतें कभी बाहर नहीं निकली अकेले. वो इस तरह, रात में आखिर क्या मुसीबत आ गई."[2] वर्तमान परिस्थिति में इस अवस्था में बहुत सारा परिवर्तन आया है. परंतु प्राचीन काल में उच्चर्गीय परिवार में जहां आर्थिक दृष्टि से संपन्नता होती है, वहां की दशा भी दयनीय है. उसे विवशतावश अपना दम घुटते हुए भी वही पर जीवन व्यतीत करना पड़ता था क्योंकि परिवार की इज्जत महत्त्वपूर्ण होती है. वहां व्यक्ति का महत्त्व नहीं होता है. 'पुण्यभोज' कहानी कमरुद्दीन साहब एक बहुत बड़े धनवान व्यक्ति है. उनके कई व्यवसाय चलते हैं. उच्चवर्ग के लोगों का यह एक तरीका होता है कि सालभर चोरी, बेईमानी और धोखाधडी से कमाई हुई अपनी जायदाद को नेको और ईमानदारी को साबित करने के लिए खुदा के नाम पर भोज रखकर उसमें से ही थोडा बहुत खर्च करते हैं. अफसर अधिकारियों को पार्टियां देते हैं, और अपना कालाधन या दो नंबर से कमाया हुआ धन सुरक्षित रखने के लिए लोगों को अन्नदान करते उनके द्वारा सवाब हासिल करने का प्रयास करते हैं. कमरुद्दीन साहब भीइन्हीं उच्चवर्गीयों में से एक है. वह भी अपने धन का व्यय अपनी ईमानदारी साबित करने के लिए करते हैं और ईश्वर के नाम पर अन्नदान करते है, बिस्मिल्लाह ने इस वर्ग की काली करतूतों का पर्दाफाश करने का प्रयास 'पुण्यभोज' कहानी में किया है, " क्या बढिया कानून है में साहब कि जिंदगीभर चोरी, बेईमानी कीजिए ओर साल में एक बार ग्यारहवीं शरीफ पर खूब खिला दीजिए लोगों को,सारे गुनाह माफ ! दूसरों का गला काटकर अपना घर भर लीजिए और खुदा की राह जकात दे दीजिए, अल्लामियां खुश."[3] इसी प्रकार अपने काले कारनामे छिपाने के लिए उच्चवर्ग का व्यक्ति ईश्वर कोभी घूस देने का प्रयास करता है. ' खाल खींचनेवाले ' कहानी के बड़ेमियां का चरित्र एक उच्चवर्गीय व्यक्ति का है. क्योंकि वे सर्व दृष्टि से संपन्न है. वे मरे हुए जानवरों के चमडे का व्यापार तो करते हैं लेकिन है बहुत ही अमीर व्यक्ति. क्योंकि पूरे व्यापारियों का माल अंत में वे अकेले खरिदतें हैं, इसीलिए पूरे फड के मालिक वहीं हैं. उनके पास किसी भी चीज की न की कमी नहीं है. " बड़े मियां के पास ट्रकें है, बंगला है, कार है, मोटर साइकिल है, उस पर दौडनेवाले उनके अपने लडके हैं, यह गोदाम है, है, गोदाम में में सूखे-गीले चमडों का अंबार लगा है."[4] इतना सब कुछ होते हुए भी जो अवगुण उच्चवर्गीय लोगों में होते हैं, वे भी उनमें कम नहीं हैं. वे भुनेसर जैसे सामान्य और श्रमिक, मजदूर ने लाए इतने बड़े चमड़े का सिर्फ पंद्रह रुपए दाम देकर उसका शोषण करते हैं. अर्थात् उनके पास धन संपत्ति होते हुए भी सामान्यों को चूसने की आदत है.

'दरबे के लोग ' कहानी में लेखक ने निम्नवर्गीय और पिछडे जुलाहों की बस्ती का चित्रण किया है. वे लोग कैसे अपना गुजर- बसर करते हैं, साथ ही उनके जीवन से जुडी आवास की समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है. अर्थभाव, गरीबी, पिछडापन और दयनीय जीवन को निम्नवर्ग अपनेतकदीर का भाग मानते हैं, उसे ईश्वर की देन समझते हैं. ऊपर से गिरस्ता लोगों द्वारा अन्याय - अत्याचार और उसके बदले में सिर्फ उन्हें मजदूरी मिलती है. एक सी जिंदगी बितानेवाले समाज का यथार्थ रूप प्रकट करने का प्रयास लेखक ने किया है, "दरअसल उस पूरी बस्ती में दरबे - ही - दरबे थे और उनकी जिंदगी भी एक सी थी . सस्ती लुंगियां और चुडीदार में पैजामे पहल ने पहनना बुरादे से खाना पकाना और गिरस्ता के लिए साडियां तैयार करना यही उनकी दिनचर्या थी. यही उनका फैशन था. इसके बाहर इनके लिए कोई दुनिया नहीं थी."[5] स्वतंत्रता के पश्चात तू हमारी सरकार ने पिछड़े और निम्नवर्ग की अन्य समस्याओं के साथ आवास की समस्या सुलझाने के आश्वासन दिए, परंतु उस पर आज तक किसी का ध्यान तक नहीं गया है. आधुनिक भारतीय समाज के इस वर्ग के कई लोग महानगरों की झुग्गी झोपडियों में जीवनयापन करते हैं, तो दूसरी ओर

अमीरों के कुत्ते-बिल्लियां गद्दी पर सोते हैं. कितना दुर्देवी, दयनीय और अभिशप्त जीवन है इस निम्नवर्ग
का देशको आर्थिक, वैज्ञानिक और सामाजिक उन्नति तो होती गई, लेकिन से इस व्यवस्था में अमीर, अमीर होता गया और गरीब, गरीब.

'लफंगां' कहानी का मुआ अपने भाइयों के साथ रहता है. उसका परिवार भी निम्नमध्यवर्गीय है. वह हमेशा अपनी तथा अपने परिवार और समाज की मुसीबतों के बारे सोचते रहता है. एक दिन उनका परिवार विभाजित होने की वजह से तो वह और भी टूट जाता है. परंतु शहर से चाचा उसे उससे बदतर जिंदगी जीनेवाले और संघर्ष से जीवनयापन करनेवाले निम्नवर्ग का दुख उसके सामने रखते हैं, " तुम जिस दर्द को झेल रहे हो उसे मैं समझता हूं. लेकिन वह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना उन लोगों का दर्द जो पेट भर अन्न और तन भर वस्त्र के लिए तरस रहे हैं. अपनी पीड़ा को उनकी पीड़ा के सामने रखकर देखो जरा, तुम्हें लगेगा कि तुम्हारी पीडा छोटो पड़ गई है. फिर जिस व्यवस्था में तुम रहे हो, वह सामंती व्यवस्था का ही दूसरा संस्करण है."[6] उच्चवर्गीय समाज का भी यही उद्देश्य है कि जनसामान्यों को तकलीफ देकर अपने स्वार्थ को सफल बनाना. परंतु आज सामान्य वर्ग में भी परिवर्तन होने लगा है. शैक्षिक विकास के कारण उनमें व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना जागृत हुई है और वे आज अपने अधिकारों की मांग कर रहे हैं.

'बैरंग चिठ्ठी' कहानी का वहिद् एक सामान्य व्यक्ति और पेशे से डाकिया है. वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी प्रामाणिकता से निभाता है. साथ ही वह अपने बेटे गुड्डु को कान्वेंट स्कूल में पढाने की इच्छा रखता है. बेटे को बाबू या बडा अफसर बनाने के सपने देखता है. उस कान्वेंट स्कूल में उसके बेटे गुड्डू का इंटरव्यू भी अच्छा होता है. लेकिन बच्चे का पिता एक सामान्य डाकिया और निम्नवर्गीय परिवेश में पला होने की वजह से उसके बेटे का ॲडमिशन कान्वेंट स्कूल में नहीं होता है. वही हानी मुईनद्दीन का पोता इंटरव्यू में रोते हुए बाहर आता है, उसे तो कुछ भी नहीं आता. लेकिन हानी साहब कुछ घूस देकर अपने पोते का ॲडमिशन पक्का करतें हैं. परिणास्वरूप वह सामान्यों के जीवन के बारे में एक डाकिये की हैसियत से सोचने लगता है, " पोस्ट ऑफिस में न जाने कितने पत्र ऐसे भी आते हैं, उनकी बात ही मला क्या है."[7]

निष्कर्ष :

उच्चवर्गीय समाज हमेशा से निम्नवर्ग पर निर्भर होता है, क्योंकि उसका अपने समाज पर कोई बस नहीं होता, वहां का हर व्यक्ति एक जैसा होता है.अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में समाज के पिछड़े से पिछड़े वर्ग की वेदना का चित्रण किया है.उस समाज की वेदना ,दुःख,सामाजिक ,मानसिक असमानता को दिखाया गया है. उनकी कहानियों के पत्रों के माध्यम से उन्होंने शोषित समाज से कुछ पात्रों में नवचेतना और जागृति का भी प्रयास किया है.उनकी कहानी के पात्र सामाजिक बदलाव को लेकर सोच रखने का प्रयास करते दिखाई देते है.इन पत्रों के माध्यम से लिखने अपने विचार और भावों को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है.साहित्यकार हमेशा से इस कोशिश में रहता है कि अपने विचारों किसी-न -किसी पात्र के माध्यम से हमारे सामने रखता है और अपने समाज में परिवर्तन लाने की कोशिश की जाती है.झुग्गी झोपड़ियों में रहनेवाला समाज ऊपर उठने की कोशिश करता है.

संदर्भ संकेत:

1. डॉ जवाहर सिंह हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि, पृ.136
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह – अतिथि देवो भाव ,पृ.22
3. वही,पृ.52
4. वही,पृ.62
5. कितने कितने सवाल ,पृ.30
6. वही,रैनबसेरा पृ.102
7. वही,पृ.138